IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक दर्शन का समकालीन सरकारी नीतियों के साथ तुलनात्मक विश्लेषण

डॉ. प्रियंका सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, जननायक चंद्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

सुनीता सिंह

शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, जननायक चंद्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

सार (Abstract)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारत के उन मौलिक चिंतकों में से हैं जिन्होंने भारतीय परंपरा के अनुरूप एक स्वदेशी सामाजिक दर्शन का निर्माण किया। उनका यह दर्शन मूलतः *एकात्म मानववाद* की अवधारणा पर केंद्रित है, जिसमें प्रकृति, व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र को एक इकाई के रूप में देखने का प्रयास किया गया है। यह दर्शन समाज के सबसे अंतिम व्यक्ति के विकास एवं उसके लिए न्याय पर आधारित है। यह केवल वैचारिक दर्शन न होकर व्यावहारिक दर्शन भी है। प्रस्तुत शोध पत्र में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक दर्शन के प्रमुख आयामों—एकात्म मानववाद, सामाजिक समरसता, अंत्योदय की अवधारणा, धर्म आधारित सामाजिक व्यवस्था, विकास एवं विकेंद्रीकरण—का विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है। साथ ही समकालीन भारत में लागू विभिन्न प्रकार की सरकारी नीतियों जैसे प्रधानमंत्री जन-धन योजना, स्वच्छ भारत अभियान, आत्मनिर्भर भारत, अंत्योदय अन्न योजना, आयुष्मान भारत योजना आदि से जुड़े विचारों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यह अध्ययन यह प्रदर्शित करता है कि दीनदयाल उपाध्याय का सामाजिक दर्शन आज भी नीतिगत स्तर पर अत्यंत प्रासंगिक है तथा सरकारों के लिए पथ-प्रदर्शक की भूमिका निभाता है।

मुख्य शब्द: पंडित दीनदयाल उपाध्याय का सामाजिक दर्शन, एकात्म मानववाद, समकालीन सरकारी नीतियाँ, आयुष्मान भारत, प्रधानमंत्री जन-धन योजना, स्वच्छ भारत अभियान, आत्मनिर्भर भारत।

प्रस्तावना

भारतीय सामाजिक चिंतन की परंपरा प्राचीन काल से ही अत्यंत समृद्ध एवं व्यावहारिक रही है। यह परंपरा केवल दर्शन के स्तर पर ही सीमित नहीं रही, अपितु इसका संबंध समाज के व्यावहारिक संगठन तथा नैतिक जीवन से भी रहा है। भारत के स्वतंत्र होने के बाद हमारे नीति-निर्माताओं के समक्ष जो सर्वाधिक बड़ी चुनौती थी, वह थी भारत के लिए एक विकास मॉडल का निर्माण करना। सभी की सोच यह थी कि यह विकास मॉडल ऐसा हो जो सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक विरासत तथा देश की आर्थिक प्रगति के बीच संतुलन स्थापित कर सके। तत्कालीन भारत के अधिकांश नेता पश्चिमी पूँजीवादी तथा समाजवादी मॉडल को भारतीय संदर्भ में लागू करने का सुझाव दे रहे थे।

इसी समय पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय परंपरा एवं उसकी विरासत को समझते हुए एक स्वदेशी सामाजिक दर्शन का प्रारूप प्रस्तुत किया, क्योंकि उनका दृढ़ विश्वास था कि भारतीय समस्याओं का समाधान भारतीय दृष्टिकोण से ही संभव है। उस समय तत्कालीन सरकारों ने उनके सामाजिक दर्शन को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया, परंतु वर्तमान सरकारों ने उनके सामाजिक दर्शन को समकालीन नीति निर्माण तथा विकास के विमर्श में महत्वपूर्ण स्थान दिया है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की पारिवारिक पृष्ठभूमि एक सामान्य भारतीय परिवार की थी, जिससे उनका जीवन अधिकांशतः अभाव और संघर्ष में व्यतीत हुआ। इसका प्रभाव उनके सामाजिक दर्शन पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जिसमें जनसामान्य के प्रति संवेदनशीलता एवं सहानुभूति का भाव विद्यमान है। उनकी वैचारिक पृष्ठभूमि का मुख्य स्रोत भारतीय दर्शन, उपनिषद, गीता एवं राष्ट्रवादी चिंतन रहा है। वे न तो परंपराओं के प्रति अंधसमर्थक थे और न ही आधुनिकतावादी सोच के प्रति पूर्वाग्रही। उनका उद्देश्य परंपरा और आधुनिकता के बीच ऐसा समन्वय स्थापित करना था, जिससे सदियों से चली आ रही सुदृढ़ परंपराएँ भी जीवित रहें और उनमें आधुनिक समय के अनुरूप संशोधन भी होता रहे।

दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक दर्शन का मूल आधार: एकात्म मानववाद

एकात्म मानववाद पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक दर्शन का मूल बिंदु है। वर्ष 1965 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की व्याख्यानमाला में उन्होंने एकात्म मानववाद के दर्शन की व्याख्या की। उनका मानना था कि मनुष्य केवल भौतिक आवश्यकताओं से संचालित प्राणी नहीं है। वस्तुतः उसके जीवन के चार प्रमुख आयाम हैं—शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा।

शरीर भौतिक आवश्यकताओं का प्रतिनिधित्व करता है, मन भावनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक पक्ष को, बुद्धि विवेक एवं तर्कशीलता को तथा आत्मा नैतिक एवं आध्यात्मिक पक्ष को अभिव्यक्त करती है। दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि यदि कोई भी विकास केवल शरीर तथा भौतिक सुखों तक सीमित रह जाए, तो समाज में असंतुलन उत्पन्न हो जाता है। इसलिए समाज के संपूर्ण विकास के लिए सभी पक्षों का संतुलित विकास आवश्यक है। अतः सामाजिक नीतियों का निर्माण इन सभी आयामों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

एकात्म मानववाद व्यक्ति और समाज के बीच समन्वय पर बल देता है। दीनदयाल उपाध्याय का यह स्पष्ट मत था कि व्यक्ति का विकास समाज के माध्यम से ही संभव है तथा व्यक्ति का विकास ही समाज का लक्ष्य होना चाहिए। ऐसे में इन दोनों के बीच सहयोग के अतिरिक्त कोई अन्य मार्ग नहीं हो सकता।

धर्म आधारित सामाजिक व्यवस्था

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की सामाजिक व्यवस्था धर्म पर आधारित थी। किंतु यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि उनका धर्म सामान्य अर्थों में संप्रदाय विशेष तक सीमित नहीं था। वास्तव में उनके धर्म का तात्पर्य उस सामाजिक व्यवस्था से था, जो नैतिक नियमों के आधार पर समाज को संचालित करती है। उनका मानना था कि जब सामाजिक व्यवस्था केवल अधिकारों पर बल देती है और कर्तव्यों को पीछे छोड़ देती है, तब सामाजिक विघटन उत्पन्न होता है।

दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार राज्य केवल कानून व्यवस्था बनाए रखने वाला उपकरण मात्र नहीं है, बल्कि उसका दायित्व समाज के नैतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों की रक्षा करना भी है।

सामाजिक समरसता का सिद्धांत

भारतीय समाज में जाति, वर्ग एवं आर्थिक असमानता एक बड़ी चुनौती के रूप में विद्यमान रही है। एक सामाजिक विचारक के रूप में दीनदयाल उपाध्याय ने इस चुनौती का समाधान अपने दर्शन के माध्यम से प्रस्तुत किया। वे जन्म आधारित भेदभाव के विरोधी थे। उनका मानना था कि जन्म के आधार पर समाज में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिए। वे सभी वर्गों को समान आदर एवं अवसर प्रदान करने के पक्षधर थे। आज जिस सामाजिक न्याय की कल्पना की जाती है, उसकी जड़ें दीनदयाल उपाध्याय के समरसता आधारित विचारों में दिखाई देती हैं।

अंत्योदय की अवधारणा

अंत्योदय पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक दर्शन की सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावशाली अवधारणा है। अंत्योदय का शाब्दिक अर्थ है—समाज के अंतिम व्यक्ति का उदय। उनका स्पष्ट विचार था कि कोई भी समाज तब तक सामाजिक न्याय की बात नहीं कर सकता, जब तक समाज की नीतियाँ और योजनाएँ अंतिम व्यक्ति तक नहीं पहुँचतीं।

किसी भी योजना का मूल्यांकन इस आधार पर होना चाहिए कि उससे समाज के सबसे कमजोर व्यक्ति को कितना लाभ प्राप्त हो रहा है। इस दृष्टि से उनका चिंतन आर्थिक विकास से अधिक सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा पर केंद्रित था।

समकालीन सरकारी नीतियों पर दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक दर्शन का प्रभाव

1. आयुष्मान भारत योजना और स्वास्थ्य सुरक्षा - आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत गरीब एवं वंचित वर्गों के साथ-साथ वरिष्ठ नागरिकों को स्वास्थ्य बीमा सुरक्षा प्रदान की जा रही है। यह योजना दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद के सिद्धांत के अनुरूप है, जिसमें शारीरिक एवं मानसिक कल्याण को सामाजिक विकास का आधार माना गया है।

2. अंत्योदय अन्न योजना एवं खाद्य सुरक्षा - कोविड-19 महामारी के समय से सरकार द्वारा समाज के सबसे वंचित वर्गों को रियायती दरों पर खाद्यान्न उपलब्ध कराया जा रहा है। यह योजना अंत्योदय की अवधारणा का व्यावहारिक रूप है।

3. आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी - 'वोकल फॉर लोकल', 'एक जिला एक उत्पाद' तथा आत्मनिर्भर भारत जैसी योजनाएँ दीनदयाल उपाध्याय के स्वदेशी एवं आत्मनिर्भर समाज के विचारों का प्रतिफल हैं।

4. प्रधानमंत्री जन-धन योजना - इस योजना के माध्यम से गरीब वर्ग को औपचारिक बैंकिंग प्रणाली से जोड़कर प्रत्यक्ष लाभ अंतरण सुनिश्चित किया गया, जो अंत्योदय एवं समावेशी विकास की अवधारणा पर आधारित है।

5. स्वच्छ भारत अभियान - स्वच्छ भारत अभियान केवल स्वच्छता कार्यक्रम नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और कर्तव्य-बोध को जागृत करने का प्रयास है, जो दीनदयाल उपाध्याय के धर्म आधारित सामाजिक नैतिकता के अनुरूप है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय का व्यापक एवं समग्र सामाजिक दर्शन भारतीय समाज की आत्मा को अभिव्यक्त करता है। समकालीन सरकारी योजनाओं में अंत्योदय, समावेशी विकास, स्वदेशी और आत्मनिर्भरता जैसे तत्व उनके विचारों की जीवंतता को सिद्ध करते हैं। समकालीन सामाजिक एवं नैतिक संकटों के समाधान के लिए उनका सामाजिक दर्शन आज भी एक सशक्त वैचारिक आधार प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

1. दीनदयाल उपाध्याय, *एकात्म मानववाद*, प्रभात प्रकाशन।
2. राम बहादुर राय, *पंडित दीनदयाल उपाध्याय समग्र*।
3. दीनदयाल उपाध्याय (1960), *राष्ट्रजीवन की समस्याएँ*, राष्ट्र धर्म प्रकाशन, लखनऊ।
4. अग्रवाल रविन्द्र (2018), *पं. दीनदयाल जी के प्रेरक विचार*, विधा विहार, नई दिल्ली।
5. आठवले वामनराव (1994), *राष्ट्रीय एकता और समरसता*, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ।
6. कुलकर्णी शरद अनंत (2014), *पंडित दीनदयाल उपाध्याय: विचार दर्शन*, खंड-4, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली।

7. पंडित दीनदयाल उपाध्याय (2016), *व्यक्ति दर्शन*, खंड-1, सुरुचि प्रकाशन, दिल्ली।

8. विनायक वासुदेव नेने (2015), *पंडित दीनदयाल उपाध्याय: एकात्म मानव दर्शन*, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली।